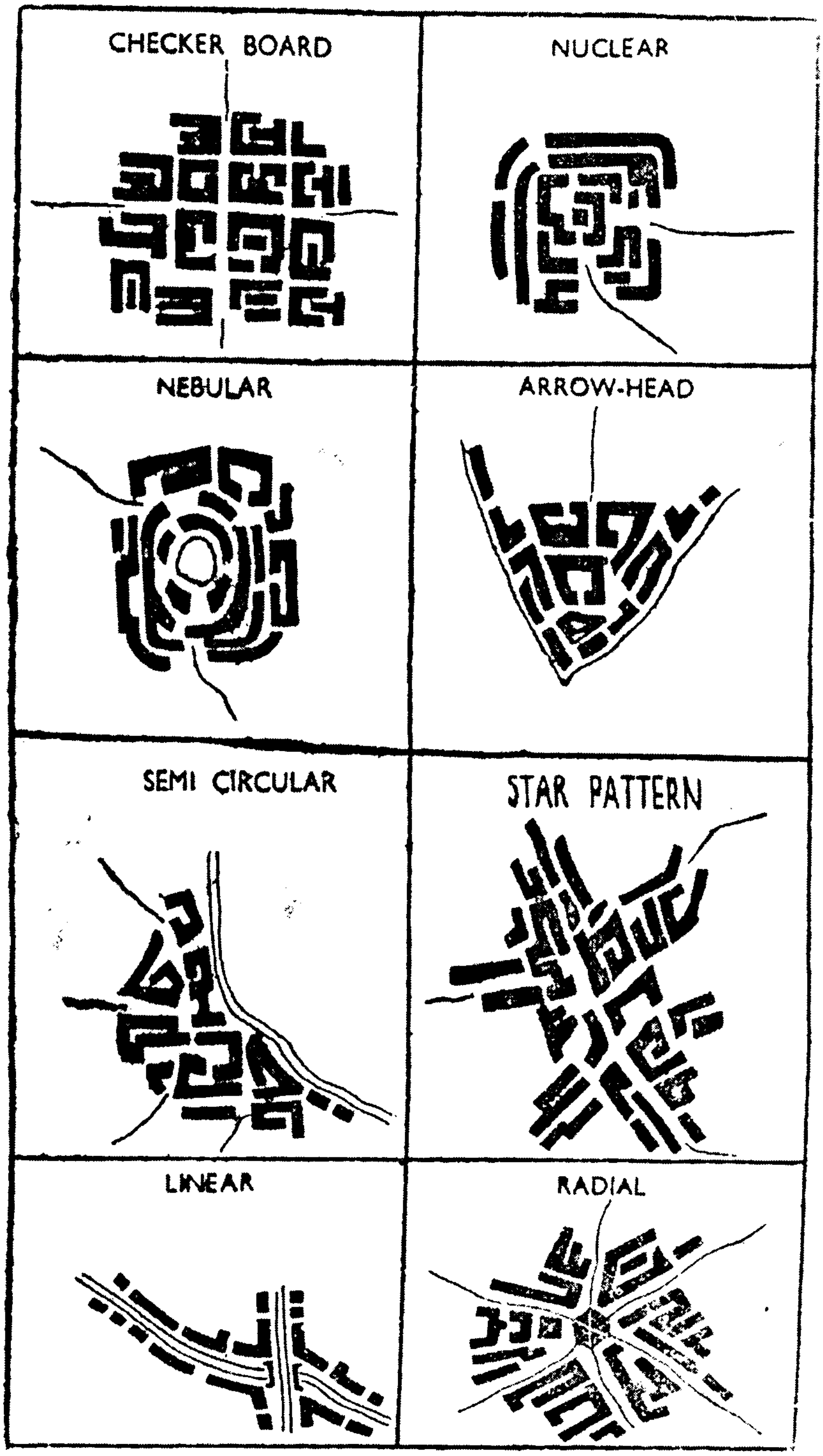

चित्र : मानवीय बस्तियों के मुख्य प्रतिरूप

बढ़ावा मिल रहा है जिससे सघन अधिवास अर्द्ध-सघन (Semi-Compact) रूप में परिणत होते जा रहे हैं। सघन बस्तियों के बीच इसी प्रकार की बस्तियाँ मिलती है। इनके बीच प्रायः बैलगाड़ी के आने-जाने का रास्ता होता है।

5.3.3 पुरवा युक्त/अपखण्डित/अधिवास (Hamleted/Fragmented Settlement) :-

इस अधिवास में एक बस्ती के घर परस्पर एक-दूसरे से पृथक-पृथक कुछ दूरियों पर बसे हुए होते हैं, परन्तु वे सब मिलकर एक ही बस्ती बनाते हैं। उन थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बसे हुए घरों या छोटे पुरवों के मिलने से एक बस्ती बनती है और उस समस्त बस्ती का एक नाम होता हैं। ऐसे बस्ती या अधिवास को एस० डी० कौशिक ने अपखण्डित (Fragmented) अधिवास कहा है। ऐसे अधिवास को डॉक्टर आर० एल० सिंह ने भी Fragmented या Hamleted Settlement का नाम दिया। ऐसे अधिवास सघन और प्रविकीर्ण अधिवासों के संक्रमण क्षेत्र हैं। इस प्रकार के अधिवास भारत के कई क्षेत्रों में मिलते हैं, जैसे गंगा-घाघरा दोआब में, ऊपरी गंगा-यमुना बेसिन के बाढ़-ग्रस्त क्षेत्रों में, जैसे -अम्बाला, सहारनपुर, बिजनौर, रामपुर, और पीलीभीत के जिलों में, दून घाटियों में स्थित नहरों के क्षेत्रों में तथा बाढ़ क्षेत्रों की ऊपर उठी हुई भूमियों (Rising grounds) पर देहरादून घाटी, चोखम दून, इत्यादि में है।

5.4 प्रविकीर्ण/एकांकी अधिवास (Dispersed/Isolated Settlement)

इसमें गृह (Home steads) एक दूसरे से दूर-दूर समूचे ग्राम में बिखरे होते हैं जिनके बीच में खेत, बाग-बगीचा, ऊसर आदि गैर आवासीय क्षेत्र स्थित होते है। देश में इस प्रकार के अधिवास हिमालय के कटक और पर्वत-स्कन्ध पर, असम एवं अरूणाचल प्रदेश के नये बसे वनक्षेत्र, पश्चिमी घाट के सहारे सतारा से केरल तक के पहाड़ी क्षेत्र, पश्चिमी मालवा पठार, थार मरूक्षेत्र (बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर जिले), बिहार और उत्तर प्रदेश के बाढ़ग्रस्त क्षेत्र तथा पश्चिम बंगाल के लद्यु जलाशयों के समीपवर्ती क्षेत्र में वितरीत पाये जाते हैं। उत्तराखण्ड में इनका वितरण निचले हिमाचल क्षेत्र, दून घाटियों, भाबर क्षेत्र तथा उत्तर प्रदेश मे सोन के दक्षिण के पठारी क्षेत्र तथा घाघरा एवं गंगा नदियों के खादर (Khadar) क्षेत्र में देखा जाता है (अहमद, 1952, पृ० 223-46)। देश के बाद ग्रस्त क्षेत्रों में भी ऐसी बस्तियाँ पाई जाती है। इसमें रहने वाले परिवार आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न नहीं होते परन्तु उनमें चारों तरफ खेती के लिए पर्याप्त भूमि होती है।

5.5 सारांश (Summing-up)

भारत की 72.2 प्रतिशत जनसंख्या कुल 5,93,643 गाँवों में निवास करती है। अहमद के अनुसार- किसी निश्चित भूखण्ड, जिसे 'मौजा' कहते हैं के अन्तर्गत ग्रामीण आवासों के विशिष्ट समूहन (Groups) को प्रकार कहते हैं। इसे अधिवास में स्थित भवनों की संख्या तथा उसके मध्य की पारस्परिक दूरी के आधार पर निर्धारित किया जाता है। मोटे तौर पर भारत में ग्रामीण अधिवासों के दो प्रकार है:- (1) एकल या प्रविकीर्ण (Isolated or Dispersed) (2) सामूहिक, न्यष्टित, गुच्छित या सघन (Agglomerated, Nucleated, Clustered or Compact)। इन्हीं दोनों ग्रामीण अधिवासों के बीच बिखराव के स्तर के आधार पर अर्द्ध सघन (Semi-compact) पुरवा युक्त (Hamleted) एवं अपखण्डित (Fragmented) प्रकारों का निर्धारण किया जाता है जिसके आधार पर भारत में चार प्रकार की बस्तियाँ पायी जाती है:-

(1) सघन अधिवास (Compact Settlement)

(2) अर्द्ध-सघन अधिवास (Semi-Compact Settlement)

(3) पुरवा युक्त अधिवास (Hamleted/Fragmented Settlement)

(4) प्रविर्कीण अधिवास (Dispersed Settlement)

5.8 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

1. भारत ग्रामीण अधिवास के विभिन्न प्रकारों का विवरण दीजिए।

   Give an account of different types of settlement in India.

2. भारत में पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार के ग्रामीण अधिवासों का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

   Describe the various types of Rural Settlement in India giving example.

3. भारत में सघन एवं प्रविकीर्ण अधिवासों को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारकों की समीक्षा कीजिए।

   Review the geographical factors affecting compact and dispersed settlement in India.

5.9 सन्दर्भ पुस्तकें (References Book)

1. भारत का वृहत् भूगोल : बंसल, सुरेशचन्द्र, 1996, मेरठ
2. भारत का भूगोल : आर०सी०तिवारी, 2007, इलाहाबाद
3. मानव भूगोल : डॉ० एस०डी०कौशिक, 1999, मेरठ
4. अधिवास भूगोल : डॉ० एच०एस०गर्ग, 1998, मेरठ
5. Singh, J : India
6. Hussain, Majid : Human Geography.

●●●

भूगोल के प्रमुख व्यक्तित्व

अलेग्जैंडर वॉन हम्बोल्ट।

कार्ल रिटर।

फ्रेडरिक रेटज़ेल।

कुमारी सैम्पुल

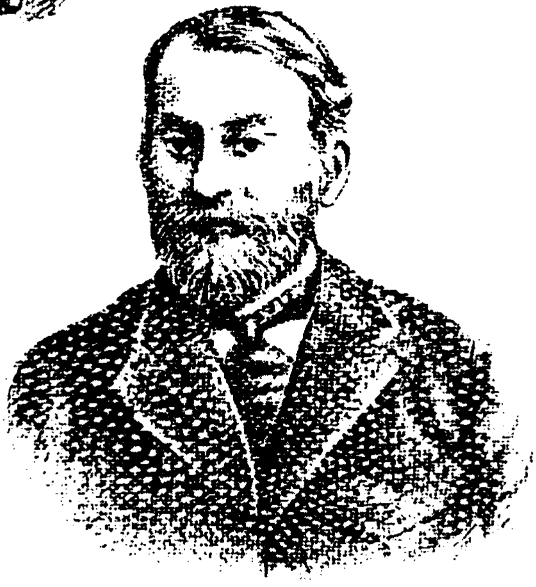

विडाल डी ला ब्लाश

भूगोल के प्रमुख व्यक्तित्व

ईसा बोमेन ।

जीन ब्रुंश ।

ग्रिफिथ टेलर
(नव-निश्चयवाद के प्रतिपादक)

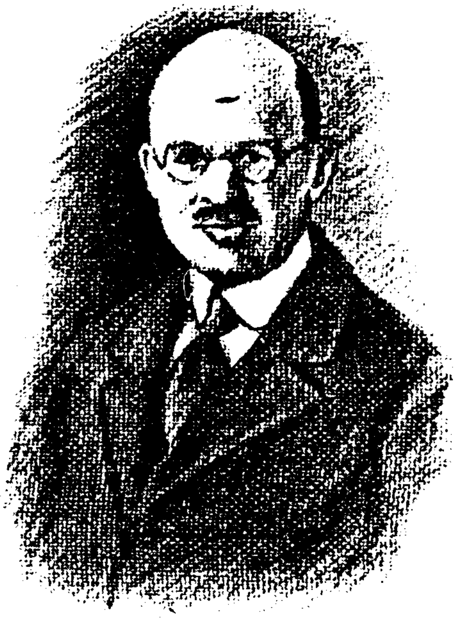

हंटिंगटन

ए. जे. हरबर्टसन